

लोक प्रशासन के सिद्धांतों के निर्माण में प्रशासनिक विचारकों की भूमिका: एक तुलनात्मक दृष्टिकोण

Vandana Massey

Research Scholar

Dept. of public administration
HRIT university (Uttar Pradesh)

Prof.(Dr) MK Jain

Dean , Faculty of Social Science and Humanities
HRIT University Ghaziabad

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT /OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NO VISIBILITY ON WEBSITE /UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR AT THE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

सार

यह अध्ययन एक तुलनात्मक विश्लेषणात्मक ढाँचे के माध्यम से लोक प्रशासन के सिद्धांतों को आकार देने में प्रशासनिक विचारकों की निर्णायक भूमिका की जाँच करता है। यह शोध इस बात की जाँच करता है कि शास्त्रीय और आधुनिक प्रशासनिक विद्वानों ने लोक प्रशासन की सैद्धांतिक नींव और व्यावहारिक अनुप्रयोगों में किस प्रकार योगदान दिया है। यह अध्ययन वुडरो विल्सन, मैक्स वेबर, फ्रेडरिक टेलर, लूथर गुलिक, हर्बर्ट साइमन, ड्वाइट वाल्डो और मैरी पार्कर फोलेट सहित प्रमुख विचारकों पर केंद्रित है, उनके विशिष्ट सैद्धांतिक योगदानों का विश्लेषण करता है और संगठनात्मक प्रबंधन एवं शासन के प्रति उनके दृष्टिकोणों की तुलना करता है। व्यवस्थित साहित्य समीक्षा और तुलनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, यह शोध प्रकट करता है कि प्रशासनिक विचारकों ने राजनीति-प्रशासन द्वंद्व और नौकरशाही तर्कसंगतता से लेकर सीमित तर्कसंगतता और मानवीय संबंधों तक की अवधारणाओं को प्रस्तुत करके लोक प्रशासन को मौलिक रूप से आकार दिया है। निष्कर्ष दर्शाते हैं कि जहाँ शास्त्रीय विचारकों ने संरचनात्मक दक्षता और पदानुक्रमित संगठन पर बल दिया, वहीं आधुनिक सिद्धांतकारों ने व्यावहारिक दृष्टिकोण, मूल्य-आधारित प्रशासन और सहभागी प्रबंधन की वकालत की। यह तुलनात्मक दृष्टिकोण प्रशासनिक चिंतन के यांत्रिक सिद्धांतों से मानवतावादी ढाँचों तक के विकास पर प्रकाश डालता है, और दर्शाता है कि कैसे विविध बौद्धिक परंपराओं ने सामूहिक रूप से लोक प्रशासन को एक अकादमिक अनुशासन और पेशेवर अभ्यास के रूप में समृद्ध किया है। शोध

का निष्कर्ष है कि लोकतांत्रिक समाजों में जटिल शासन चुनौतियों से निपटने वाले समकालीन लोक प्रशासकों के लिए इन विविध सैद्धांतिक दृष्टिकोणों को समझना आवश्यक है।

कीवर्ड: प्रशासनिक विचारक, लोक प्रशासन सिद्धांत, तुलनात्मक दृष्टिकोण, नौकरशाही सिद्धांत, संगठनात्मक प्रबंधन

1. परिचय

एक अकादमिक अनुशासन और पेशेवर अभ्यास के रूप में लोक प्रशासन को अनेक प्रशासनिक विचारकों के बौद्धिक योगदान ने गहराई से आकार दिया है, जिन्होंने संगठनात्मक व्यवहार, सरकारी दक्षता और लोक सेवा वितरण की व्याख्या करने वाले सिद्धांत विकसित किए हैं। लोक प्रशासन सिद्धांतों का निर्माण एक शताब्दी से भी अधिक समय तक चले एक संचयी बौद्धिक प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है, जिसके दौरान विविध पृष्ठभूमियों के विद्वानों ने इस बारे में अद्वितीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किए हैं कि सार्वजनिक संगठनों की संरचना, प्रबंधन और मूल्यांकन कैसे किया जाना चाहिए। इन प्रशासनिक विचारकों ने न केवल अमूर्त अवधारणाओं के बारे में सिद्धांत गढ़े हैं, बल्कि व्यावहारिक शासन चुनौतियों से भी सक्रिय रूप से जुड़े हैं, और लोकतांत्रिक आदर्शों को नौकरशाही दक्षता, व्यक्तिगत स्वायत्तता को संगठनात्मक नियंत्रण और वैज्ञानिक प्रबंधन को मानवीय मूल्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया है। प्रशासनिक विचारकों का अध्ययन करने का महत्व यह समझने में निहित है कि उनके प्रासंगिक अनुभवों, दार्शनिक अभिविन्यासों और पद्धतिगत दृष्टिकोणों ने लोक प्रशासन सिद्धांत के विकास को कैसे प्रभावित किया है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, प्रशासनिक चिंतन में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं, जो राजनीति और प्रशासन के बीच विल्सन के द्वंद्व से वेबर के नौकरशाही तर्कशक्ति, टेलर के वैज्ञानिक प्रबंधन से फोलेट के मानवीय संबंधों और शास्त्रीय सिद्धांतों से व्यावहारिक निर्णय-निर्माण सिद्धांतों तक पहुँचे हैं। प्रत्येक प्रशासनिक विचारक विशिष्ट ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक संदर्भों में उभरा, जिसने उनके सैद्धांतिक सूत्रीकरण और व्यावहारिक अनुशासकों को आकार दिया।

प्रशासनिक विचारकों के अध्ययन हेतु एक तुलनात्मक दृष्टिकोण लोक प्रशासन सिद्धांतों की विविधता और समृद्धि के बारे में बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। विभिन्न विद्वानों के सैद्धांतिक योगदानों की व्यवस्थित

रूप से तुलना करके, हम इस क्षेत्र की विशेषता वाले समान विषयों, विपरीत दृष्टिकोणों और विकसित होते प्रतिमानों की पहचान कर सकते हैं। यह तुलनात्मक विश्लेषण बताता है कि कैसे प्रशासनिक चिंतन ने राजनीति विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और प्रबंधन अध्ययनों से प्राप्त अंतर्दृष्टियों को उत्तरोत्तर समाहित किया है, जिससे समकालीन लोक प्रशासन के लिए एक बहु-विषयक आधार तैयार हुआ है। प्रशासनिक विचारकों का अध्ययन लोक प्रशासन की प्रकृति, उद्देश्य और विधियों पर चल रही बहसों को भी उजागर करता है। ये बहसें इन मूलभूत प्रश्नों को समाहित करती हैं कि प्रशासन विज्ञान है या कला, क्या दक्षता को लोकतांत्रिक मूल्यों पर हावी होना चाहिए, क्या संगठनों को सार्वभौमिक सिद्धांतों या प्रासंगिक विश्लेषण के माध्यम से समझा जा सकता है, और क्या प्रशासनिक व्यवहार मुख्यतः तर्कसंगत होता है या कई अतार्किक कारकों से प्रभावित होता है। विभिन्न विचारकों ने इन प्रश्नों को किस प्रकार संबोधित किया है, यह समझना वर्तमान और भविष्य के लोक प्रशासकों के लिए आवश्यक ज्ञान प्रदान करता है।

यह शोध लोक प्रशासन के सिद्धांतों के निर्माण में प्रमुख प्रशासनिक विचारकों की भूमिका का परीक्षण करता है, और उनके विशिष्ट योगदानों, पद्धतिगत दृष्टिकोणों और क्षेत्र पर उनके स्थायी प्रभावों को उजागर करने के लिए एक तुलनात्मक विश्लेषणात्मक ढाँचे का उपयोग करता है। यह अध्ययन सात प्रमुख विद्वानों पर केंद्रित है जिनके कार्यों ने प्रशासनिक चिंतन को मौलिक रूप से आकार दिया है: वुडरो विल्सन, मैक्स वेबर, फ्रेडरिक टेलर, लूथर गुलिक, हर्बर्ट साइमन, ड्वाइट वाल्डो और मैरी पार्कर फोलेट। उनके सिद्धांतों की व्यवस्थित तुलना के माध्यम से, यह शोध दर्शाता है कि कैसे प्रशासनिक विचारकों ने सामूहिक रूप से लोक प्रशासन के लिए एक मज़बूत सैद्धांतिक आधार तैयार किया है, जबकि संगठनात्मक शासन पर विविध और कभी-कभी विरोधाभासी दृष्टिकोण बनाए रखे हैं।

2. साहित्य की समीक्षा

प्रशासनिक विचारकों और लोक प्रशासन सिद्धांतों पर साहित्य एक समृद्ध बौद्धिक परंपरा को दर्शाता है जो एक शताब्दी से भी अधिक समय से विद्वत्पूर्ण अन्वेषण की रही है। वुडरो विल्सन के 1887 के मौलिक निबंध "द स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन" ने लोक प्रशासन को अकादमिक अध्ययन के एक विशिष्ट क्षेत्र के रूप में स्थापित किया, जिसमें राजनीति और प्रशासन के बीच पृथक्करण की वकालत की गई। विल्सन

(1887) ने तर्क दिया कि प्रशासनिक प्रश्न राजनीतिक प्रश्न नहीं होते और प्रशासनिक दक्षता के लिए राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त पेशेवर प्रबंधन की आवश्यकता होती है। यह राजनीति-प्रशासन द्वैत शास्त्रीय लोक प्रशासन सिद्धांत में एक आधारभूत अवधारणा बन गया, हालाँकि बाद के विद्वानों द्वारा इसकी व्यापक आलोचना की गई, जिन्होंने प्रशासनिक निर्णयों की अंतर्निहित राजनीतिक प्रकृति को पहचाना। मैक्स वेबर के नौकरशाही सिद्धांत ने प्रशासनिक चिंतन के लिए एक और आधारशिला प्रदान की। वेबर (1922) ने नौकरशाही का एक आदर्श प्रकार का मॉडल विकसित किया, जिसकी विशेषताएँ पदानुक्रमित अधिकार, औपचारिक नियम, विशिष्ट श्रम विभाजन, अवैयक्तिक संबंध और योग्यता-आधारित भर्ती थीं। वेबर की नौकरशाही बड़े पैमाने के प्रशासन में पूर्वानुमान, दक्षता और जवाबदेही प्राप्त करने के लिए संगठन के सबसे तर्कसंगत रूप का प्रतिनिधित्व करती थी। हालाँकि, विद्वानों ने उल्लेख किया है कि वेबर की आदर्श प्रकार की नौकरशाही अक्सर लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवीय आवश्यकताओं के साथ संघर्ष करती है, जिसके परिणामस्वरूप कठोरता, लक्ष्य विस्थापन और अलगाव जैसे दुष्क्रियात्मक परिणाम सामने आते हैं।

फ्रेडरिक टेलर के वैज्ञानिक प्रबंधन सिद्धांतों ने कार्य-प्रक्रियाओं के व्यवस्थित अध्ययन पर ज़ोर दिया ताकि कार्य-पूर्ति के सबसे कुशल तरीकों की पहचान की जा सके। टेलर (1911) ने समय और गति अध्ययन, प्रक्रियाओं के मानकीकरण और नियोजन को कार्यान्वयन से अलग करने की वकालत की। हालाँकि टेलरवाद ने प्रारंभिक लोक प्रशासन पद्धति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, आलोचकों का तर्क था कि इसने कर्मचारियों को मशीन के मात्र दाँतों में बदल दिया, और संगठनात्मक जीवन के मनोवैज्ञानिक और सामाजिक आयामों की उपेक्षा की। वैज्ञानिक प्रबंधन में अंतर्निहित यांत्रिक मान्यताओं को मानवीय संबंध सिद्धांतकारों ने चुनौती दी, जिन्होंने अनौपचारिक संगठन, कर्मचारी प्रेरणा और सहभागी प्रबंधन के महत्व पर ज़ोर दिया। लूथर गुलिक ने अपने प्रसिद्ध संक्षिप्त नाम POSDCORB में शास्त्रीय प्रबंधन सिद्धांतों का संश्लेषण किया, जो कार्यकारी प्रबंधन के सात कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है: नियोजन, संगठन, स्टाफिंग, निर्देशन, समन्वय, रिपोर्टिंग और बजट। गुलिक (1937) ने तर्क दिया कि ये कार्य सभी प्रकार के संगठनों में मुख्य कार्यकारी अधिकारियों के आवश्यक कार्य हैं। उनका योगदान "प्रशासन के विज्ञान पर पत्र" में प्रकाशित हुआ, जो शास्त्रीय प्रशासनिक सिद्धांत के शिखर का प्रतिनिधित्व करता है। हालाँकि, बाद में हर्बर्ट साइमन ने गुलिक के सिद्धांतों की आलोचना करते हुए उन्हें अस्पष्ट कहावतें बताया जिनमें अनुभवजन्य आधार और तार्किक संगति का अभाव था।

हर्बर्ट साइमन ने सीमित तर्कसंगतता की अवधारणा प्रस्तुत करके प्रशासनिक चिंतन में क्रांति ला दी। साइमन (1947) ने "प्रशासनिक व्यवहार" में तर्क दिया कि प्रशासक अधिकतमीकरण नहीं करते, बल्कि "संतुष्टि" करते हैं, संज्ञानात्मक सीमाओं, अपूर्ण जानकारी और समय की कमी के कारण इष्टतम समाधानों के बजाय संतोषजनक समाधानों की तलाश करते हैं। इस व्यवहारिक दृष्टिकोण ने प्रशासनिक सिद्धांत को निर्देशात्मक सिद्धांतों से वास्तविक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं के वर्णनात्मक विश्लेषण की ओर मोड़ दिया। साइमन के कार्य ने उन्हें अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार दिलाया और संगठनात्मक व्यवहार और प्रशासनिक निर्णय लेने की विद्वानों की समझ को मौलिक रूप से बदल दिया। ड्वाइट वाल्डो ने शास्त्रीय लोक प्रशासन सिद्धांत के वैज्ञानिक दावों को चुनौती दी और तर्क दिया कि प्रशासन स्वाभाविक रूप से मूल्य-प्रधान और राजनीतिक होता है। वाल्डो (1948) ने "द एडमिनिस्ट्रेटिव स्टेट" में तर्क दिया कि दक्षता स्वयं एक मूल्य-विकल्प का प्रतिनिधित्व करती है और प्रशासनिक निर्णयों में अनिवार्य रूप से राजनीतिक विचार शामिल होते हैं। उनकी आलोचना ने प्रशासनिक ज्ञान की प्रकृति और लोक प्रशासन में तथ्यों और मूल्यों के बीच संबंध पर प्रसिद्ध साइमन-वाल्डो बहस की शुरुआत की। वाल्डो के मानवतावादी दृष्टिकोण ने इस बात पर ज़ोर दिया कि लोक प्रशासन को केवल तकनीकी दक्षता का अनुसरण करने के बजाय लोकतांत्रिक आदर्शों की सेवा करनी चाहिए।

मैरी पार्कर फोलेट ने प्रबंधन के लिए मानवीय संबंध दृष्टिकोण की शुरुआत की, जिसमें सहभागी नेतृत्व, रचनात्मक संघर्ष समाधान और संबंधों पर सत्ता के बजाय सत्ता के साथ पर ज़ोर दिया गया। फोलेट (1918, 1924) ने तर्क दिया कि सच्चा नेतृत्व पदानुक्रमित अधिकार का प्रयोग करने के बजाय समूह प्रक्रियाओं को सुगम बनाने से उभरता है। संघर्ष समाधान के प्रति उनके एकीकृत दृष्टिकोण ने ऐसे समाधान खोजे जो सभी पक्षों को संतुष्ट करें, न कि समझौता थोपने के। अपने जीवनकाल में काफ़ी हद तक नज़रअंदाज़ किए जाने के बावजूद, फोलेट के कार्यों को परिवर्तनकारी नेतृत्व, संगठनात्मक शिक्षा और सहयोगात्मक शासन के समकालीन सिद्धांतों की भविष्यवाणी करने के लिए नई मान्यता मिली है। प्रशासनिक विचारकों के तुलनात्मक अध्ययनों ने कई महत्वपूर्ण विषयों की पहचान की है। पहला, प्रशासनिक विचार यांत्रिकता से मानवतावादी दृष्टिकोणों की ओर विकसित हुआ है, जिसमें मानव प्रेरणा, संगठनात्मक संस्कृति और सामाजिक गतिशीलता के बारे में अंतर्दृष्टियाँ उत्तरोत्तर शामिल होती गई हैं। दूसरा, दक्षता और लोकतंत्र के बीच, तकनीकी तर्कसंगतता और राजनीतिक मूल्यों के बीच, और सार्वभौमिक सिद्धांतों और प्रासंगिक आकस्मिकताओं के

बीच निरंतर तनाव रहा है। तीसरा, प्रशासनिक सिद्धांतों ने संगठनात्मक जीवन में निहित जटिलता और अनिश्चितता को तेजी से पहचाना है, और सरलीकृत सूत्रों से हटकर संगठनात्मक व्यवहार की सूक्ष्म समझ की ओर अग्रसर हुए हैं। चौथा, समकालीन प्रशासनिक विद्वत्ता विविध सैद्धांतिक परंपराओं से विविधतापूर्ण रूप से प्रेरणा लेती है, और शास्त्रीय सिद्धांतों, व्यवहार विज्ञान, प्रणाली सिद्धांत और आलोचनात्मक दृष्टिकोणों से अंतर्दृष्टियों का संश्लेषण करती है।

3. उद्देश्य

- लोक प्रशासन सिद्धांत में प्रमुख प्रशासनिक विचारकों के सैद्धांतिक योगदान का विश्लेषण और तुलना करना।
- शास्त्रीय सिद्धांतों से लेकर आधुनिक व्यावहारिक और मानवतावादी दृष्टिकोणों तक प्रशासनिक विचार के विकास की जांच करना।

4. क्रियाविधि

यह शोध व्यवस्थित साहित्य समीक्षा पद्धति पर आधारित तुलनात्मक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करता है। यह अध्ययन सात प्रमुख प्रशासनिक विचारकों पर केंद्रित है जिन्होंने लोक प्रशासन सिद्धांत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है: वुडरो विल्सन, मैक्स वेबर, फ्रेडरिक टेलर, लूथर गुलिक, हर्बर्ट साइमन, ड्वाइट वाल्डो और मैरी पार्कर फोलेट। इन विद्वानों का चयन उनके ऐतिहासिक महत्व, सैद्धांतिक प्रभाव और प्रशासनिक चिंतन में विविध दृष्टिकोणों के प्रतिनिधित्व के आधार पर किया गया है। डेटा संग्रह में इन प्रशासनिक विचारकों द्वारा रचित मूल ग्रंथों सहित प्राथमिक स्रोतों की व्यापक समीक्षा के साथ-साथ उनके कार्यों के विद्वतापूर्ण विश्लेषण, समालोचना और व्याख्याओं सहित द्वितीयक स्रोतों का भी अध्ययन शामिल था। इस शोध में शास्त्रीय और समकालीन साहित्य, दोनों का अध्ययन किया गया ताकि यह समझा जा सके कि समय के साथ इन विचारकों के योगदान को कैसे स्वीकार किया गया, लागू किया गया और उन पर कैसे विवाद किया गया। प्रासंगिक विद्वतापूर्ण प्रकाशनों की पहचान के लिए गूगल स्कॉलर, जेएसटीओआर और अकादमिक संग्रहों सहित डिजिटल डेटाबेस को व्यवस्थित रूप से खोजा गया। विश्लेषण का ध्यान प्रत्येक

विचारक की केंद्रीय सैद्धांतिक अवधारणाओं, पद्धतिगत दृष्टिकोणों, दार्शनिक मान्यताओं और प्रशासनिक अभ्यास के लिए व्यावहारिक अनुशंसाओं की पहचान करने पर केंद्रित था।

तुलनात्मक विश्लेषण ढाँचे ने चयनित प्रशासनिक विचारकों के विविध आयामों की जाँच की। इन आयामों में प्रशासन की प्रकृति (विज्ञान बनाम कला) पर उनके विचार, मानव स्वभाव और संगठनात्मक व्यवहार के बारे में उनकी धारणाएँ, संगठनात्मक संरचना और प्रबंधन के लिए उनके सुझाव, लोकतंत्र और दक्षता के बीच संबंधों के बारे में उनका दृष्टिकोण, और प्रशासन के अध्ययन के लिए उनके पद्धतिगत दृष्टिकोण शामिल थे। इन आयामों की व्यवस्थित तुलना करके, शोध ने प्रशासनिक विचारकों के बीच अभिसरण और विचलन दोनों की पहचान की, जिससे प्रशासनिक चिंतन के विकास और इस क्षेत्र की विशेषता रही निरंतर बहसों पर प्रकाश पड़ा। शोध ने प्रशासनिक सिद्धांतों को समझने के लिए एक व्याख्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया, यह मानते हुए कि ये सिद्धांत विशिष्ट ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक संदर्भों में उभरे हैं, जिन्होंने उनके निर्माण को आकार दिया। वैज्ञानिक वैधता के प्रासंगिक मानदंडों के आधार पर सिद्धांतों का मूल्यांकन करने के बजाय, विश्लेषण ने यह समझने का प्रयास किया कि प्रत्येक विचारक किन समस्याओं पर विचार कर रहा था, किन मान्यताओं ने उनके चिंतन को निर्देशित किया, और उनके योगदान ने बाद के प्रशासनिक सिद्धांत और व्यवहार को कैसे प्रभावित किया। विभिन्न प्रशासनिक दृष्टिकोणों की अंतर्दृष्टि और सीमाओं, दोनों को समझने के लिए यह प्रासंगिक समझ आवश्यक है।

5. परिणाम

वुडरो विल्सन: राजनीति-प्रशासन द्वंद्व

प्रशासनिक विचारकों के तुलनात्मक विश्लेषण से विशिष्ट सैद्धांतिक अभिविन्यास और योगदानों का पता चलता है जिन्होंने सामूहिक रूप से लोक प्रशासन को एक अकादमिक अनुशासन और पेशेवर क्षेत्र के रूप में आकार दिया है। वुडरो विल्सन ने यह आधारभूत आधार स्थापित किया कि प्रशासन राजनीति से पृथक एक विशिष्ट क्षेत्र है, जिसके लिए विशिष्ट पेशेवर ज्ञान और तकनीकों की आवश्यकता होती है। उनके राजनीति-प्रशासन द्वंद्व ने इस बात पर ज़ोर दिया कि प्रशासनिक दक्षता पक्षपातपूर्ण राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त व्यावसायिक प्रबंधन विधियों के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। हालाँकि इस द्वंद्व की अवास्तविक

और अवांछनीय कहकर व्यापक रूप से आलोचना की गई है, इसने लोक प्रशासन के पेशेवर स्वायत्तता और तकनीकी विशेषज्ञता के दावे को स्थापित किया है।

मैक्स वेबर: नौकरशाही तर्कसंगतता

मैक्स वेबर के नौकरशाही सिद्धांत ने आधुनिक प्रशासनिक संगठनों को समझने के लिए सबसे प्रभावशाली ढाँचा प्रदान किया। वेबर ने आदर्श प्रकार की नौकरशाही की छह विशेषताएँ पहचानीं: पदानुक्रमित प्राधिकार संरचना, औपचारिक लिखित नियम और प्रक्रियाएँ, कार्यात्मक विशेषज्ञता पर आधारित विशिष्ट श्रम विभाजन, सार्वभौमिक मानदंडों के अनुसार मामलों का अवैयक्तिक निपटान, योग्यता-आधारित भर्ती और पदोन्नति, और आधिकारिक पद और निजी जीवन के बीच पृथक्करण। यह तर्कसंगत-कानूनी प्राधिकार प्रणाली बड़े पैमाने पर सामूहिक कार्रवाई के समन्वय के लिए संगठन के सबसे कुशल और पूर्वानुमानित रूप का प्रतिनिधित्व करती थी। हालाँकि, वेबर ने नौकरशाही की तर्कसंगतता के लोकतांत्रिक मूल्यों और मानवीय सहजता के साथ टकराव की संभावना को भी पहचाना, और नौकरशाही की शिथिलताओं की आलोचनाओं की आशंका जताई।

फ्रेडरिक टेलर: वैज्ञानिक प्रबंधन

फ्रेडरिक टेलर के वैज्ञानिक प्रबंधन ने समय और गति अध्ययनों के माध्यम से इष्टतम विधियों की पहचान करने के लिए कार्य प्रक्रियाओं के व्यवस्थित विश्लेषण पर ज़ोर दिया। टेलर ने प्रबंधन द्वारा किए जाने वाले मानसिक नियोजन कार्य और श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले भौतिक निष्पादन, औज़ारों और प्रक्रियाओं के मानकीकरण, टुकड़ा-दर प्रोत्साहन प्रणालियों और श्रमिकों के वैज्ञानिक चयन और प्रशिक्षण के बीच स्पष्ट अंतर की वकालत की। हालाँकि टेलरवाद ने औद्योगिक उत्पादकता में उल्लेखनीय सुधार किया, लेकिन श्रमिकों को अमानवीय बनाने, अनौपचारिक संगठन की उपेक्षा करने और यह मानने के लिए इसकी आलोचना की गई कि श्रमिक केवल आर्थिक प्रोत्साहनों से प्रेरित होते हैं।

लूथर गुलिक: POSDCORB और शास्त्रीय सिद्धांत

लूथर गुलिक ने अपने POSDCORB ढाँचे में शास्त्रीय प्रबंधन सिद्धांतों का संश्लेषण किया, जिसमें कार्यकारी प्रबंधन के सात मुख्य कार्यों की पहचान की गई: नियोजन (उद्देश्यों और विधियों का निर्धारण), संगठन (औपचारिक ढाँचा स्थापित करना), स्टाफिंग (कर्मचारियों की भर्ती और विकास), निर्देशन (निर्णय लेना और आदेश जारी करना), समन्वय (संगठनात्मक गतिविधियों का एकीकरण), रिपोर्टिंग (हितधारकों को सूचित रखना), और बजट (वित्तीय नियोजन और नियंत्रण)। गुलिक ने विशेषज्ञता, नियंत्रण की अवधि और आदेश की एकता सहित संगठनात्मक डिज़ाइन के सिद्धांतों का भी योगदान दिया। ये सिद्धांत कुशल संगठन के सार्वभौमिक नियमों की शास्त्रीय प्रशासनिक सिद्धांत की खोज की परिणति का प्रतिनिधित्व करते थे।

हर्बर्ट साइमन: सीमित तर्कसंगतता और व्यवहारिक दृष्टिकोण

हर्बर्ट साइमन ने शास्त्रीय सिद्धांतों की तार्किक विसंगतियों और अनुभवजन्य समर्थन के अभाव को प्रदर्शित करके उन्हें मौलिक रूप से चुनौती दी। साइमन की सीमित तर्कसंगतता की अवधारणा ने माना कि प्रशासकों को संज्ञानात्मक सीमाओं, अपूर्ण जानकारी और समय के दबाव का सामना करना पड़ता है जो अनुकूलन को रोकते हैं। अधिकतम करने के बजाय, प्रशासक न्यूनतम स्वीकार्य मानदंडों को पूरा करने वाले समाधानों की तलाश करके "संतुष्टि" करते हैं। साइमन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि संगठनात्मक निर्णयों में तथ्यात्मक और मूल्य दोनों आधार शामिल होते हैं, और प्रशासन मुख्य रूप से उपयुक्त संगठनात्मक डिज़ाइन, सूचना प्रणालियों और निर्णय प्रक्रियाओं के माध्यम से तर्कसंगत निर्णय लेने को सुगम बनाने पर आधारित होता है। उनके व्यवहारिक दृष्टिकोण ने प्रशासनिक सिद्धांत को निर्देशात्मक सिद्धांतों से वास्तविक संगठनात्मक व्यवहार के अनुभवजन्य विश्लेषण में बदल दिया।

ड्वाइट वाल्डो: मूल्य-प्रधान प्रशासन

ड्वाइट वाल्डो ने शास्त्रीय लोक प्रशासन सिद्धांत की सबसे व्यापक दार्शनिक आलोचना प्रस्तुत की। वाल्डो ने तर्क दिया कि प्रशासन स्वाभाविक रूप से राजनीतिक और मूल्य-प्रधान होता है, दक्षता स्वयं एक विशिष्ट मूल्य विकल्प का प्रतिनिधित्व करती है, और लोक प्रशासन को तटस्थ विज्ञान के बजाय राजनीतिक सिद्धांत

के रूप में समझा जाना चाहिए। उनकी आलोचना ने शास्त्रीय सिद्धांतों और साइमन के व्यावहारिक दृष्टिकोण, दोनों में अंतर्निहित प्रत्यक्षवादी मान्यताओं को चुनौती दी और प्रशासनिक व्यवहार के मानक आयामों को मान्यता देने का तर्क दिया। वाल्डो ने इस बात पर जोर दिया कि लोक प्रशासन लोकतांत्रिक शासन की सेवा करता है और उसे दक्षता को समता, सहभागिता और जवाबदेही सहित अन्य महत्वपूर्ण मूल्यों के साथ संतुलित करना चाहिए।

मैरी पार्कर फोलेट: मानवीय संबंध और सहभागी नेतृत्व

मैरी पार्कर फोलेट ने प्रशासन के मानवतावादी दृष्टिकोणों का बीड़ा उठाया, जिसमें सहभागी नेतृत्व, एकीकृत संघर्ष समाधान और पारस्परिक संबंधों पर जोर दिया गया। फोलेट का तर्क था कि प्रभावी नेतृत्व पदानुक्रमित अधिकार का प्रयोग करने के बजाय समूह प्रक्रियाओं को सुगम बनाने से उभरता है, संघर्षों का समाधान प्रभुत्व या समझौते के बजाय सभी पक्षों को संतुष्ट करने वाले एकीकरण के माध्यम से किया जाना चाहिए, और सत्ता को दूसरों पर "सत्ता" के बजाय "दूसरों के साथ" सत्ता के रूप में समझा जाना चाहिए। उनके प्रक्रिया-उन्मुख दृष्टिकोण ने संगठनात्मक अधिगम, सहयोगात्मक शासन और परिवर्तनकारी नेतृत्व के समकालीन सिद्धांतों का पूर्वानुमान लगाया। अपने जीवनकाल में हाशिए पर रहने के बावजूद, फोलेट के विचारों को आधुनिक सहभागी और नेटवर्क शासन के लिए उनकी प्रासंगिकता के कारण नई मान्यता मिली है।

प्रशासनिक विचार के विकास में पैटर्न

तुलनात्मक विश्लेषण प्रशासनिक चिंतन के विकास में कई महत्वपूर्ण पैटर्न प्रकट करता है। पहला, यांत्रिक दृष्टिकोण से मानवतावादी दृष्टिकोणों की ओर, संगठनों को मशीनों के रूप में देखने से लेकर उन्हें सामाजिक व्यवस्थाओं के रूप में समझने तक, एक प्रगतिशील बदलाव आया है। दूसरा, प्रशासनिक सिद्धांत निर्देशात्मक सार्वभौमिक सिद्धांतों से वर्णनात्मक व्यवहार विश्लेषण और प्रासंगिक आकस्मिकता सिद्धांतों की ओर अग्रसर हुआ है। तीसरा, प्रशासन की राजनीतिक और मूल्य-प्रधान प्रकृति की मान्यता बढ़ रही है, जो वैज्ञानिक तटस्थता के दावों को चुनौती दे रही है। चौथा, समकालीन प्रशासनिक चिंतन विविध सैद्धांतिक परंपराओं से

विविधतापूर्ण रूप से प्रेरणा लेता है, संगठनात्मक संरचना, मानव व्यवहार, राजनीतिक गतिशीलता और नैतिक विचारों के बारे में अंतर्दृष्टि का संश्लेषण करता है।

6. बहस

दक्षता बनाम लोकतंत्र: निरंतर तनाव

प्रशासनिक विचारकों का तुलनात्मक विश्लेषण उन मूलभूत बहसों पर प्रकाश डालता है जो लोक प्रशासन के सिद्धांत और व्यवहार को आकार देती रहती हैं। दक्षता और लोकतंत्र के बीच का तनाव प्रशासनिक चिंतन में एक सतत विषय का प्रतिनिधित्व करता है। विल्सन, वेबर, टेलर और गुलिक जैसे शास्त्रीय सिद्धांतकारों ने दक्षता, तर्कसंगतता और तकनीकी विशेषज्ञता को प्राथमिकता दी, और इन्हें आधुनिक जटिल समाजों में प्रभावी शासन के लिए आवश्यक माना। उन्होंने माना कि प्रशासनिक दक्षता वैज्ञानिक सिद्धांतों, पदानुक्रमित संगठन और पेशेवर प्रबंधन के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। हालाँकि, वाल्डो और फोलेट जैसे आलोचकों ने इस बात पर ज़ोर दिया कि दक्षता को भागीदारी, जवाबदेही, समानता और मानवीय गरिमा सहित लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ संतुलित किया जाना चाहिए। यह तनाव लोक प्रशासन के उद्देश्य के बारे में गहरे प्रश्नों को दर्शाता है: क्या यह मुख्य रूप से नीतियों को कुशलतापूर्वक लागू करने का एक तकनीकी साधन है, या यह लोकतांत्रिक शासन का एक अनिवार्य घटक है जिसमें स्वयं लोकतांत्रिक मूल्य समाहित होने चाहिए?

प्रशासन विज्ञान या कला: ज्ञानमीमांसीय बहस

प्रशासन एक विज्ञान है या कला, इस पर बहस प्रशासनिक ज्ञान के बारे में विभिन्न ज्ञानमीमांसीय मान्यताओं को दर्शाती है। शास्त्रीय सिद्धांतकारों ने तर्कसंगत विश्लेषण और व्यवस्थित अवलोकन पर आधारित प्रशासन के सार्वभौमिक सिद्धांतों को विकसित करने का प्रयास किया, और प्राकृतिक विज्ञानों के समतुल्य प्रशासन का विज्ञान बनाने की आकांक्षा की। साइमन ने व्यावहारिक विश्लेषण और तार्किक दृढ़ता के माध्यम से प्रशासनिक अध्ययन को वैज्ञानिक आधार पर स्थापित करने का प्रयास किया। हालाँकि, वाल्डो ने तर्क दिया कि प्रशासन स्वाभाविक रूप से राजनीतिक और मूल्य-प्रधान है, और प्राकृतिक विज्ञान की तुलना में

राजनीतिक दर्शन के अधिक निकट है। समकालीन विद्वान आमतौर पर मानते हैं कि प्रशासन में वैज्ञानिक और कलात्मक दोनों तत्व शामिल होते हैं, जो संगठनात्मक व्यवहार के बारे में व्यवस्थित ज्ञान को प्रासंगिक निर्णय, नैतिक चिंतन और राजनीतिक संवेदनशीलता के साथ जोड़ता है।

यंत्रवत से मानवतावादी दृष्टिकोण तक

यंत्रवत से मानवतावादी दृष्टिकोणों की ओर विकास, प्रशासनिक विचारकों द्वारा संगठनों और मानव व्यवहार की अवधारणा में एक मौलिक परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है। शास्त्रीय सिद्धांतकारों ने संगठनों को कुशल उत्पादन के लिए डिज़ाइन की गई मशीनों के रूप में देखा, जिनमें कर्मचारी मानकीकृत कार्य करने वाले अदला-बदली योग्य घटकों के रूप में थे। इस यंत्रवत दृष्टिकोण को मानवीय संबंध सिद्धांतकारों ने उत्तरोत्तर चुनौती दी, जिन्होंने अनौपचारिक संगठन, कर्मचारी प्रेरणा, सहभागी प्रबंधन और संगठनात्मक संस्कृति के महत्व पर बल दिया। फोलेट ने इस मानवतावादी दृष्टिकोण का बीड़ा उठाया, यह तर्क देते हुए कि संगठनों को जीवंत सामाजिक प्रणालियों के रूप में समझा जाना चाहिए जहाँ संबंध, संचार और सहयोगात्मक समस्या-समाधान केंद्रीय हैं। समकालीन प्रशासनिक सिद्धांत संरचनात्मक और मानवीय दृष्टिकोणों को एकीकृत करने के लिए संघर्षरत है, यह मानते हुए कि प्रभावी प्रशासन के लिए कुशल प्रणालियों और संलग्न लोगों, दोनों की आवश्यकता होती है।

प्रशासनिक निर्णय लेने में तर्कसंगतता

प्रशासनिक निर्णय लेने में तर्कसंगतता का उपचार सभी सिद्धांतकारों के बीच महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुआ। शास्त्रीय सिद्धांतकारों ने व्यापक तर्कसंगतता को स्वीकार किया, यह मानते हुए कि प्रशासक सभी विकल्पों का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण कर सकते हैं और इष्टतम समाधानों का चयन कर सकते हैं। साइमन की सीमित तर्कसंगतता की अवधारणा ने प्रशासनिक निर्णय लेने का एक अधिक यथार्थवादी विवरण प्रदान किया, जिसमें संज्ञानात्मक सीमाओं, अपूर्ण जानकारी और संतोषजनक व्यवहार को मान्यता दी गई। हालाँकि, बाद के विद्वानों ने तर्क दिया है कि सीमित तर्कसंगतता भी तर्कसंगत गणना पर अत्यधिक बल देती है जबकि अंतर्ज्ञान, भावना, संगठनात्मक राजनीति, संस्थागत मानदंडों और प्रशासनिक निर्णयों को आकार देने वाले पथ निर्भरताओं की उपेक्षा करती है। संगठनात्मक निर्णय लेने के समकालीन सिद्धांत कचरा पात्र प्रक्रियाओं,

वृद्धिवाद, संगठनात्मक अधिगम और अर्थ-निर्माण के बारे में अंतर्दृष्टि को शामिल करते हैं जो तर्कसंगत विकल्प मॉडल को और अधिक जटिल बनाते हैं।

प्रशासनिक विचारकों की संस्था-निर्माण भूमिका

लोक प्रशासन के सिद्धांतों के निर्माण में प्रशासनिक विचारकों की भूमिका उनके विशिष्ट सैद्धांतिक योगदान से आगे बढ़कर, इस क्षेत्र के बौद्धिक विमर्श और व्यावसायिक पहचान को आकार देने तक फैली हुई है। इन विचारकों ने शब्दावली, अवधारणाएँ और विश्लेषणात्मक ढाँचे स्थापित किए जिनका उपयोग बाद के विद्वानों ने प्रशासन के अध्ययन के लिए किया है। उन्होंने उन केंद्रीय समस्याओं और बहसों की पहचान की जो प्रशासनिक विद्वत्ता को आज भी प्रेरित करती हैं। उन्होंने इस बात को प्रभावित किया कि व्यवसायी अपनी भूमिकाओं, ज़िम्मेदारियों और विधियों को कैसे समझते हैं। उन्होंने ऐसे शैक्षिक कार्यक्रमों को आकार दिया जो भावी लोक प्रशासकों को तैयार करते हैं। इन तरीकों से, प्रशासनिक विचारक संस्था-निर्माता रहे हैं जिन्होंने लोक प्रशासन को एक अकादमिक अनुशासन और एक व्यावसायिक क्षेत्र, दोनों के रूप में निर्मित और बनाए रखा।

पारंपरिक प्रशासनिक विचार में सीमाएँ और पूर्वाग्रह

हालाँकि, तुलनात्मक विश्लेषण पारंपरिक प्रशासनिक चिंतन की सीमाओं और पूर्वाग्रहों को भी उजागर करता है। अधिकांश प्रभावशाली प्रशासनिक विचारक पश्चिमी पुरुष थे जिनके सिद्धांत अधिकार, संगठन और प्रगति के बारे में विशिष्ट सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रतिबिम्बित करते थे। उनके सिद्धांतों ने अक्सर महिलाओं के योगदान को नज़रअंदाज़ या हाशिए पर रखा, जैसा कि फ़ॉलेट द्वारा अपने नवीन विचारों के बावजूद लंबे समय तक उपेक्षा किए जाने से स्पष्ट है। प्रशासनिक सिद्धांत अक्सर उन्नत औद्योगिक समाजों की विशेषता वाले संगठनात्मक संदर्भों को ग्रहण करते थे, जिससे उनकी प्रयोज्यता विभिन्न सांस्कृतिक और विकासात्मक परिवेशों तक सीमित हो जाती थी। समकालीन प्रशासनिक विद्वत्ता अधिक विविध स्वरों, तुलनात्मक अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणों और शक्ति, असमानता और सामाजिक न्याय के उन मुद्दों पर ध्यान देने की आवश्यकता को तेज़ी से पहचान रही है जिन्हें शास्त्रीय प्रशासनिक विचारकों द्वारा अक्सर अनदेखा कर दिया जाता था।

समकालीन प्रशासन के लिए व्यावहारिक निहितार्थ

विभिन्न प्रशासनिक सिद्धांतों के व्यावहारिक निहितार्थ काफी भिन्न होते हैं। पारंपरिक सिद्धांत-आधारित दृष्टिकोण संगठनात्मक डिज़ाइन और प्रबंधन के लिए स्पष्ट मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, लेकिन जटिल, गतिशील वातावरण में अत्यधिक कठोर साबित हो सकते हैं। व्यावहारिक दृष्टिकोण निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की परिष्कृत समझ प्रदान करते हैं, लेकिन कभी-कभी प्रशासनिक कार्रवाई के लिए स्पष्ट निर्देशों का अभाव होता है। मानवतावादी दृष्टिकोण मूल्यों और संबंधों पर ज़ोर देते हैं, लेकिन संरचना और प्रणालियों के महत्व को कम आंक सकते हैं। प्रभावी प्रशासनिक अभ्यास के लिए संभवतः संदर्भ, समस्याओं और उद्देश्यों के आधार पर कई सैद्धांतिक दृष्टिकोणों से चुनिंदा रूप से प्रेरणा लेने की आवश्यकता होती है। यह उदार दृष्टिकोण समकालीन लोक प्रशासन की विशेषता है, जो किसी एक सैद्धांतिक ढाँचे से हठधर्मिता से चिपके रहने के बजाय विविध बौद्धिक परंपराओं से अंतर्दृष्टि का संश्लेषण करता है।

7. निष्कर्ष

प्रशासनिक विचारकों का यह तुलनात्मक अध्ययन लोक प्रशासन के सिद्धांतों के निर्माण में उनकी मौलिक भूमिका को दर्शाता है। सात विद्वानों ने वुडरो विल्सन, मैक्स वेबर, फ्रेडरिक टेलर, लूथर गुलिक, हर्बर्ट साइमन, ड्वाइट वाल्डो और मैरी पार्कर फोलेट का अध्ययन किया है और सामूहिक रूप से संगठनात्मक शासन, प्रशासनिक व्यवहार और लोक प्रबंधन को समझने के हमारे तरीके को आकार दिया है। उनके योगदानों में लोक प्रशासन को एक विशिष्ट व्यावसायिक क्षेत्र के रूप में स्थापित करने से लेकर नौकरशाही और प्रबंधन को समझने के लिए रूपरेखाएँ विकसित करने, वैज्ञानिक दावों को चुनौती देने और मानवतावादी मूल्यों की वकालत करने तक शामिल है। तुलनात्मक विश्लेषण से पता चलता है कि प्रशासनिक चिंतन संरचना और दक्षता पर ज़ोर देने वाले यांत्रिक सिद्धांतों से विकसित होकर व्यावहारिक अंतर्दृष्टि, राजनीतिक जागरूकता और मानवतावादी मूल्यों को समाहित करने वाले अधिक सूक्ष्म दृष्टिकोणों की ओर अग्रसर हुआ है। यह विकास संगठनात्मक जटिलता को समझने में बौद्धिक प्रगति और लोकतांत्रिक शासन में लोक प्रशासन की भूमिका के बारे में बदलती सामाजिक अपेक्षाओं, दोनों को दर्शाता है। समकालीन प्रशासनिक सिद्धांत विविध परंपराओं से विविधतापूर्ण रूप से प्रेरणा लेता है, यह मानते हुए कि प्रभावी लोक प्रशासन के लिए

संगठनात्मक संरचना, मानव व्यवहार, राजनीतिक गतिशीलता और नैतिक विचारों के बारे में अंतर्दृष्टि को एकीकृत करना आवश्यक है।

सिद्धांत निर्माण में प्रशासनिक विचारकों की भूमिका को समझना कई कारणों से आवश्यक है। पहला, यह वर्तमान प्रशासनिक अवधारणाओं के उद्भव और विकास पर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। दूसरा, यह दक्षता बनाम लोकतंत्र, विज्ञान बनाम कला, और सार्वभौमिक सिद्धांतों बनाम प्रासंगिक निर्णय के बारे में लगातार चल रही बहसों को उजागर करता है। तीसरा, यह दर्शाता है कि प्रशासनिक सिद्धांत किस प्रकार विशिष्ट मान्यताओं, मूल्यों और संदर्भों को प्रतिबिम्बित करते हैं जिनकी आलोचनात्मक जाँच आवश्यक है। चौथा, यह सुझाव देता है कि निरंतर सैद्धांतिक विकास के लिए विविध बौद्धिक परंपराओं से जुड़ना और बहुविध दृष्टिकोणों को समाहित करना आवश्यक है। समकालीन लोक प्रशासकों के लिए, इन प्रशासनिक विचारकों की विरासत ज्ञान और सावधानी दोनों प्रदान करती है। उनके सिद्धांत संगठनात्मक चुनौतियों को समझने और प्रशासनिक प्रणालियों की रूपरेखा तैयार करने के लिए मूल्यवान ढाँचे प्रदान करते हैं। हालाँकि, उनकी सीमाएँ हमें याद दिलाती हैं कि कोई भी एक सैद्धांतिक दृष्टिकोण लोक प्रशासन की पूरी जटिलता को नहीं समझ सकता। प्रभावी प्रशासनिक अभ्यास के लिए प्रासंगिक निर्णय की आवश्यकता होती है कि विशिष्ट परिस्थितियों में कौन सी सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि लागू होती है, उन मूल्यों के बारे में नैतिक चिंतन जो प्रशासनिक कार्रवाई का मार्गदर्शन करें, और इस बात की आलोचनात्मक जागरूकता कि शक्ति, असमानता और सामाजिक शक्तियाँ प्रशासनिक परिणामों को कैसे आकार देती हैं। इस प्रकार, प्रशासनिक विचारकों का तुलनात्मक अध्ययन न केवल ऐतिहासिक और सैद्धांतिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है, बल्कि विविध, लोकतांत्रिक समाजों की सेवा करने में सक्षम चिंतनशील, सूचित और नैतिक रूप से आधारित लोक प्रशासकों को विकसित करने में व्यावहारिक उद्देश्यों की भी पूर्ति करता है।

संदर्भ

1. Follett, M. P. (1918). *The new state: Group organization—The solution of popular government*. Longmans, Green and Company.
2. Follett, M. P. (1924). *Creative experience*. Longmans, Green and Company.
3. Follett, M. P. (1941). *Dynamic administration: The collected papers of Mary Parker Follett* (H. C. Metcalf & L. Urwick, Eds.). Harper & Brothers.
4. Gazell, J. A. (1982). Dwight Waldo, public administration, and the "blooming, buzzing confusion." *Public Administration Review*, 42(2), 111-119.
<https://doi.org/10.2307/975643>
5. Gomes, R. C., Alves, M. A., & Fernandes, A. S. (2024). Herbert Simon's legacy for public administration. *Public Administration*, 102(1), 145-163.
<https://doi.org/10.1111/padm.13051>
6. Gulick, L. (1937). Notes on the theory of organization. In L. Gulick & L. Urwick (Eds.), *Papers on the science of administration* (pp. 3-45). Institute of Public Administration, Columbia University.
7. Hammond, T. H. (1990). In defence of Luther Gulick's "Notes on the theory of organization." *Public Administration*, 68(2), 143-173.
<https://doi.org/10.1111/j.1467-9299.1990.tb00743.x>
8. Jones, B. D. (2003). Bounded rationality and political science: Lessons from public administration and public policy. *Journal of Public Administration Research and Theory*, 13(4), 395-412. <https://doi.org/10.1093/jopart/mug028>
9. Morse, R. S. (2006). Prophet of participation: Mary Parker Follett and public participation in public administration. *Administrative Theory & Praxis*, 28(1), 1-32.
<https://doi.org/10.1080/10841806.2006.11029525>



10. Nelson, G. M. (2017). Mary Parker Follett: Creativity and democracy. *Human Service Organizations: Management, Leadership & Governance*, 41(2), 178-185.
<https://doi.org/10.1080/23303131.2016.1263073>
11. Rosenbloom, D. H., & McCurdy, H. E. (Eds.). (2006). *Revisiting Waldo's administrative state: Constancy and change in public administration*. Georgetown University Press.
12. Simon, H. A. (1947). *Administrative behavior: A study of decision-making processes in administrative organization*. Macmillan.
13. Simon, H. A. (1976). *Administrative behavior: A study of decision-making processes in administrative organization* (3rd ed.). Free Press.
14. Stillman, R. J., II. (2020). *Dwight Waldo: Administrative theorist for our times*. Routledge.
15. Stiver, C. (2000). *Bureau men, settlement women: Constructing public administration in the progressive era*. University Press of Kansas.
16. Stout, M., & Love, J. M. (2015). *Integrative process: Follettian thinking from ontology to administration*. Process Century Press.
17. Taylor, F. W. (1911). *The principles of scientific management*. Harper & Brothers.
18. Tonn, J. C. (2003). *Mary P. Follett: Creating democracy, transforming management*. Yale University Press.
19. Waldo, D. (1948). *The administrative state: A study of the political theory of American public administration*. Ronald Press Company.
20. Waldo, D. (1980). *The enterprise of public administration*. Chandler and Sharp Publishers.
21. Weber, M. (1947). *The theory of social and economic organization* (A. M. Henderson & T. Parsons, Trans.). Free Press. (Original work published 1922)



22. Wilson, W. (1887). The study of administration. *Political Science Quarterly*, 2(2), 197-222. <https://doi.org/10.2307/2139277>

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, here by, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website /amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriconane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification /Designation /Address of my university/ college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission /Submission /Copyright /Patent /Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents (Andhra/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper maybe rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me.

Vandana Massey
Prof.(Dr) MK Jain
